पंजाब केसरी 12/01/2025

abkesari.in

अम्बाला केसरी

स्वामी विवेकानंद ने बहुत युवा अवस्था में साम्राज्यवादी मानसिकता को पहचान लिया था : डा. शिवानी शर्मा

गांधी मैमोरियल नैशनल कॉलेज में स्वामी विवेकानंद जी के 163वें जन्मदिवस की पूर्व संध्या पर आयोजित व्याख्यान में भाग लेते वक्ता और श्रोता। (देवदत्त)

अम्बाला, 11 जनवरी (बलराम): छावनी स्थित गांधी मैमोरियल नैशनल कॉलेज के इतिहास विभाग एवं स्वामी विवेकानंद प्रकोष्ठ के संयुक्त तत्वावधान में स्वामी विवेकानंद जी के 163वें जन्मदिवस की पूर्व संध्या पर शनिवार को व्याख्यान का आयोजन किया गया।

इस व्याख्यान का मुख्य विषय स्वामी विवेकानंद: लाइफ, फिलासफी एवं कंट्रीब्यूशन रहा।

इस व्याख्यान में मुख्य वक्ता के तौर पर पंजाब यूनिवर्सिटी चंडीगढ़ के इंट्रडिसीप्लिनरी सैंटर फॉर स्वामी विवेकानंद स्टडीज की को-ऑर्डिनेटर प्रो. शिवानी शर्मा रही, जबकि कार्यक्रम की अध्यक्षता जी.एम.एन. कॉलेज के प्राचार्य डा. रोहित दत्त के द्वारा की गई।

मुख्य वक्ता ने अपने व्याख्यान में बताया कि स्वामी विवेकानंद की पहचान भारत के उन महापुरुषों में से की जाती है, जिन्होंने बड़ी ही युवा अवस्था में उस साम्राज्यवादी मानसिकता को पहचान लिया था, जिसके माध्यम से ब्रिटिश साम्राज्यवाद ने भारत के ऊपर विजय प्राप्त की थी।

इसीलिए हमें ऐसे महापुरुषों के योगदान को दोबारा से उजागर करने के लिए इतिहास की दोबारा से बड़ी गहराई से खोजबीन करने की जरूरत है।

उन्होंने बताया कि स्वामी विवेकानंद एक ऐसी शख्सियत थे जो मैन आफ स्पीरिट थे। स्वामी विवेकानंद एक राष्ट्रवादी संन्यासी थे, जिन्होंने अपनी समझ से न केवल भारतवासियों, बल्कि विशेष तौर पर ब्रिटिश साम्राज्यवाद की असलियत को उजागर किया था। उनका यह मानना था कि भारत एक ऐसा राष्ट्र है जो प्राचीन काल से ही एक परिपक्व राष्ट्र के रूप में विकसित हो रहा था। ब्रिटिश भारत में जानबूझकर भारतीयों के सामने भारत की छवि को इस तरह से प्रस्तुत किया गया था, ताकि ब्रिटिश साम्राज्यवाद के औचित्य को सही ठहराते हुए भारत को लंबे समय तक गुलाम बनाकर रखा जा सके।

विवेकानंद एक प्रगतिशील, कार्यशील, दानशील प्रवृत्ति के व्यक्ति थे, उन्होंने भारत में ऐसे लोगों को जगाया, जिन्होंने भारत निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। भारत में एक युवा राष्ट्रवाद को खड़ा किया, जिसने आगे चलकर भारत को स्वतंत्र करने में अहम भूमिका निभाई थी।

हमेशा एक्शन मोड में रहते थे स्वामी जी : डा. रोहित दत्त

कॉलेज प्राचार्य डा. रोहित दत्त ने अपने अध्यक्षीय भाषण में बताया कि स्वामी विवेकानंद एक ऐसी शख्सियत थे, जो हमेशा एक्शन मोड में रहते थे। आज के युवाओं के लिए स्वामी विवेकानंद एक प्रेरणा स्रोत हैं तथा उनके जीवन के विचारों, कार्यशैली को अपनाकर आज हम एक समृद्ध और युवा भारत के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका अदा कर सकते हैं।

कार्यक्रम की शुरुआत में इतिहास विभाग के अध्यक्ष डा. धर्मवीर सैनी ने इस एकदिवसीय व्याख्यान के मुख्य विषय एवं उद्देश्यों पर प्रकाश डाला। उन्होंने बताया कि भारत सरकार द्वारा 1984 में पहली बार स्वामी विवेकानंद के जन्म दिवस को राष्ट्रीय युवा दिवस के रूप में मनाया गया था, तब से लेकर अब तक भारत के अंदर एवं पूरे विश्व में स्वामी विवेकानंद के जन्मदिन को बड़े ही उत्साह के साथ मनाया जाता है।

इस व्याख्यान को आयोजित करने का उद्देश्य स्वामी विवेकानंद के विचारों को ग्रहण करना है। साथ ही साथ उन्होंने जो एक युवा राष्ट्र का सपना देखा था, उसे सपने को पूरा करना है।

स्वामी विवेकानंद प्रकोष्ठ के प्रभारी डा. अनीश कुमार ने सभी को मुख्य वक्ता से परिचित कराते हुए स्वामी विवेकानंद के बारे में बताया। कार्यक्रम के अंत में राजनीतिक शास्त्र की एसोसिएट प्रोफैसर डा. सरोज ने मुख्य वक्ता एवं अन्य उपस्थित अतिथिगण और विद्यार्थियों का धन्यवाद प्रेषित किया।

इस अवसर पर डा. सुरजीत सिंह, डा. अनुपमा सिहाग, डा. कुलदीप यादव, डा. धर्मवीर सैनी, डा. अनीश कुमार, डा. एस.के. पांडे, प्रो. बृजेश कुमार, डा. रितु गुप्ता, डा. प्रभलीन कौर, डा. प्रियंका, प्रो. जसप्रीत कौर के साथ-साथ कॉलेज के विद्यार्थी एन.एस.एस. स्वयंसेवकों और जी.एम.एन. कॉलेज ऑफ नर्सिंग के विद्यार्थियों ने भी भागीदारी की।